Introduction

भूमिका

सामाजिक जीवन में स्तोत्रों का एक विशेष स्थान है। आदिकाल से लेकर आजतक किसी न किसी रूप में स्तोत्रों का रचना-विधान होता रहा है और उसके रचयिता आर्यों ने उनमें अपनी श्रद्धा एवं आस्था प्रकट करने में किसी भी प्रकार की कमी न आने दी है। मानव विकास की परिणति में यदि एक ओर आराध्य के प्रति श्रद्धा की आवश्यकता है तो दूसरी ओर उसके प्रति ऐसे गीतों की भी आवश्यकता है जिन्हें श्रद्धायुत होकर गा सकें। स्तोत्रों के मूल में यही भावना विद्यमान है। वे केवल आध्यात्मिकता का ही संदेश नहीं देते हैं वरन् उनसे अप्रत्यक्ष रूप में राजनैतिक, सामाजिक एवं नैतिक संदेश भी प्राप्त होता है। ऋग्वेद एवं सामवेद के स्तोत्रों की रचना इसी आधार पर हुई थी जिसकी धारा किसी न किसी रूप में आज भी चली आ रही है। प्रस्तुत शोध-प्रबंध का उद्देश्य यही है।

समस्त प्रबंध नौ अध्यायों में विभक्त है। प्रथम अध्याय में 'स्तोत्र' शब्द की उत्पत्ति, आधार, विकास एवं ~~हिन्दी में आधार पर विभिन्न सिद्धान्त की स्थापना~~ चर्चा की गई है। धार्मिक विकास में स्तोत्रों का स्थान आदि द्वितीय अध्याय में वैदिक युग से लेकर जैन, बौद्ध एवं नाथ-सिद्ध आदि संतों के स्तोत्रों का संक्षिप्त इतिहास प्रस्तुत किया गया है। तृतीय अध्याय में विद्यापति से लेकर भक्तिकाल के स्तोत्रों पर विचार किया है और तुलसी के स्तोत्रों का गम्भीर अध्ययन कर उन्हें हिन्दी का सर्व श्रेष्ठ स्तोत्रकार सिद्ध करने का प्रयत्न किया गया है। तीसरे अध्याय की सबसे बड़ी विशेषता प्रेममार्गी परम्परा के कवियों की नायिकाओं, विशेषतया जायसी की पद्मावती को ब्रह्म का प्रतीक मानकर उसके नखशिख को अलौकिक रूप प्रदान किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में भक्तिकालीन 'स्तोत्र-साहित्य' की दार्शनिक पीठिका उपस्थित की गई है और उसके भक्ति रूप को ही 'स्तोत्र-साहित्य' का आधार माना गया है।

पांचवें एवं छठे अध्यायों में क्रमानुसार इस काल के स्तोत्रकारों का

विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया गया है । यद्यपि रीतिकाल में भक्ति का स्वर कुछ मन्द पड़ गया था परन्तु उसकी गति आधुनिक काल तक चली आई और राष्ट्रीयता के रूप में परिवर्तित हो गई । परन्तु ब्रजभाषा-कवियों में उसका स्वर वैसा ही रहा । रीतिकाल में गुरू गोविंद सिंह और आधुनिक काल में निराला के सर्वश्रेष्ठ स्तोत्रकार सिद्ध करने का प्रयत्न किया गया है ।

सातवें अध्याय में समस्त 'स्तोत्र-साहित्य' का भाव-पक्ष एवं कला-पक्ष उपस्थित करके 'स्तोत्र-साहित्य' के रस पर विचार किया गया है । यद्यपि भक्ति का मूल रस शान्त, 'स्तोत्र-साहित्य' का एक पृथक रस ही सिद्ध किया है ।

आठवें अध्याय में 'स्तोत्र-साहित्य' के सामाजिक एवं सांस्कृतिक पक्ष पर विचार करते हुए इस बात को स्पष्ट करने का प्रयत्न किया गया है कि उसके आधार पर समस्त विचार धाराओं का भी अध्ययन सम्भव है । जहाँ तक 'स्तोत्र-रचना' का प्रश्न है उसके मूल रूप में सामाजिक एवं सांस्कृतिक पक्ष ही विद्यमान है जो 'स्तोत्रों' की रचना में सहायक बनता है ।

नवम् अध्याय में शोध-प्रबंध का उपसंहार प्रस्तुत करते हुए उसकी आध्यात्मिक एवं सामाजिक देन पर भी विचार किया गया है ।

'शोध-प्रबंध' के लेखन में प्रात: स्मरणीय आचार्य कुंवर चन्द्र प्रकाश सिंह से यदि एक ओर विद्वत्तापूर्ण निर्देशन प्राप्त हुआ है तो दूसरी ओर इस अवधि में उनका पितृ-तुल्य व्यवहार भी रहा है जिससे प्रबंध-लेखन में और भी उत्साह की वृद्धि हुई है ।

इसके अतिरिक्त डा० मुंशीराम शर्मा, कृतकार्य अध्यक्ष, हिन्दी-विभाग, आगरा विश्वविद्यालय, डा० फतहसिंह । प्रधानाचार्य, प्रशासकीय सनातन धर्म कालेज, कोटा । राजस्थान । डॉ० मदन गोपाल गुप्त । प्राध्यापक, बड़ौदा विश्वविद्यालय के प्रति भी मैं आभार प्रदर्शन करता हूँ जिन्होंने अपने निर्देशन एवं पुस्तकों से सहायता देकर मुझे कार्य रत रहने में सहयोग दिया है । ठाकुर

राजावख्श सिंह । रेउरी , सिधौली ,सीतापुर । से मुझे `समाधान कारिका `लक्ष्मण-शतक ` प्राप्त हुआ है जिस पर अभी तक अधिकारी विद्वानों की दृष्टि नहीं गई है । अत: वे भी धन्यवाद के पात्र हैं । साथ ही साथ मैं हिन्दी-साहित्य सम्मेलन , प्रयाग , पब्लिक लाइब्रेरी , प्रयाग , एवं बड़ौदा विश्वविद्यालय के अधिकारियों को भी धन्यवाद देता हूँ जिनके सहयोग से मेरा यह शोध-प्रबंध पूरा हो सका है ।

सर्वाधिक सहायता मुझे डा० बल्देव प्रसाद मिश्र , डा० दीनदयालु गुप्त एवं डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी के ग्रन्थों में उपलब्ध विवेचनों से प्राप्त हुई । अत: उनके प्रति जितनी भी श्रद्धा एवं आस्था प्रकट की जाय वह थोड़ी ही होगी ।

अंत में मैं अपनी प्रिय सहयोगिनी शिष्या श्रीमती सलोनी गुप्ता एम० ए० । प्रथम वर्ष । के प्रति भी आभार प्रदर्शित करता हूँ जिसने अनेक अध्यायों को सुनियोजित रूप देकर सहायक ग्रंथों की सूची तैयार करने में मेरी सहायता की है । वह सदैव मेरे स्नेह और साधुवाद की पात्रा है ।

टंकन की अशुद्धियों के प्रति अत्यधिक सावधानी रखी गई है किंतु यदि अब भी अशुद्धियां अवशेष रह गई हों तो उनके प्रति ~~ध्यान न दिया जाय~~ लेखक विनम्रभाव से क्षमाप्रार्थी है ।

: हनुमानदास गुप्त : `चकोर `